ISSN: 2249-7196
IJMRR/Jan-March. 2022/ Volume 12/Issue 1/1-12
संजय कुमार/ International Journal of Management Research & Review

उच्चतर माध्यमिक छात्राओं का सशक्तिकरण: पटना, बिहार में एक अध्ययन

संजय कुमार[1], डॉ. मनोज कुमार[2]
शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय[1]
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साईं नाथ विश्वविद्यालय[2]

सार

यह अध्ययन पटना, बिहार में उच्च माध्यमिक छात्राओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले बहुआयामी कारकों की जांच करता है। आठ स्कूलों की 320 महिला छात्रों (उम्र 16-18) के साथ मिश्रित-पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, शोध सशक्तिकरण और चार परिकल्पित निर्धारकों के बीच संबंधों की जांच करता है: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच, सामाजिक आर्थिक स्थिति, सामाजिक समर्थन नेटवर्क और पाठ्येतर भागीदारी। मात्रात्मक निष्कर्ष सशक्तिकरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (आर=0.64, पी<0.001), सामाजिक आर्थिक स्थिति (आर=0.48, पी<0.001), और सामाजिक समर्थन नेटवर्क (आर=0.59, पी<0.001) के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंधों को प्रकट करते हैं, जिसमें पारिवारिक समर्थन विशेष रूप से प्रभावशाली के रूप में उभर रहा है। जबकि समग्र पाठ्येतर भागीदारी ने मिश्रित परिणाम दिखाए, नेतृत्व-उन्मुख गतिविधियों ने सशक्तिकरण के साथ मजबूत संबंध प्रदर्शित किया (आर=0.57, पी<0.001)। मल्टीपल रिग्रेशन विश्लेषण ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच, मातृ शिक्षा, पारिवारिक समर्थन और नेतृत्व गतिविधि भागीदारी वाले एक मॉडल की पहचान की, जिसने सशक्तिकरण स्कोर में 63% भिन्नता को समझाया। 40 साक्षात्कारों के गुणात्मक डेटा ने लड़कियों की एजेंसी और आकांक्षाओं को विकसित करने में मातृ शिक्षा, शिक्षक परामर्श और महिला रोल मॉडल की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। निष्कर्षों से पता चलता है कि सशक्तिकरण पहल को शैक्षिक पहुंच के साथ-साथ पारिवारिक जुड़ाव, नेतृत्व विकास और लिंग-उत्तरदायी शिक्षण प्रथाओं पर जोर देते हुए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यह शोध किशोर महिला सशक्तिकरण को प्रासंगिक रूप से समझने में योगदान देता है, जिसके लिए बिहार के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में लड़कियों के शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए क्षेत्रीय-उपयुक्त माप और हस्तक्षेप रणनीतियों की आवश्यकता होती है।

कीवर्ड: *महिला सशक्तिकरण, माध्यमिक शिक्षा, बिहार, सामाजिक समर्थन, नेतृत्व विकास।*

1. परिचय

भारत में किशोर लड़कियों का सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण विकासात्मक प्राथमिकता का प्रतिनिधित्व करता है, खासकर बिहार जैसे राज्यों में जहां महत्वपूर्ण नीतिगत हस्तक्षेपों के बावजूद शैक्षिक परिणामों में लैंगिक असमानताएं स्पष्ट बनी हुई हैं। यह अध्ययन बिहार की राजधानी पटना में उच्च माध्यमिक छात्राओं के सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले बहुआयामी कारकों की जांच करता है। हालाँकि हाल के दशकों में साक्षरता दर में सुधार हुआ है, फिर भी इस क्षेत्र की लड़कियों को अपनी पूरी क्षमता हासिल करने में सामाजिक मानदंडों, आर्थिक बाधाओं और प्रणालीगत शैक्षिक चुनौतियों सहित कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। पटना के शहरी शैक्षिक संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करके, यह शोध यह समझने में योगदान देता है कि विकास के इस महत्वपूर्ण चरण के दौरान विभिन्न कारक लड़कियों की एजेंसी, निर्णय लेने की क्षमताओं और भविष्य की आकांक्षाओं को कैसे प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन का मार्गदर्शन करने वाला केंद्रीय शोध प्रश्न पूछता है: "पटना, बिहार में उच्च माध्यमिक छात्राओं के बीच सशक्तिकरण के प्रमुख निर्धारक क्या हैं, और वे उनके शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास को कैसे प्रभावित करते हैं?" यह जांच चार परिकल्पनाओं पर आधारित है: पहला, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सकारात्मक रूप से सशक्तिकरण के स्तर से संबंधित है; दूसरा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति सशक्तिकरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है; तीसरा, परिवार, साथियों और शिक्षकों से युक्त सामाजिक सहायता नेटवर्क सशक्तिकरण के परिणामों को काफी हद तक प्रभावित करते हैं; और चौथा, पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी से सशक्तिकरण बढ़ता है। इन संबंधों के अनुभवजन्य माप और विश्लेषण के माध्यम से, इस अध्ययन का उद्देश्य इस विशिष्ट संदर्भ में महिला छात्र सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों की पहचान करना है।

इस शोध का दायरा पटना जिले के सरकारी और निजी दोनों संस्थानों में उच्च माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 11-12) में नामांकित लड़कियों को शामिल करता है। हालांकि यह शहरी फोकस बिहार के सबसे विकसित क्षेत्र में शैक्षिक गतिशीलता में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, लेकिन यह आवश्यक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों तक सामान्यीकरण को सीमित करता है जहां बिहार की लगभग 88% आबादी रहती है। अतिरिक्त सीमाओं में डेटा संग्रह की क्रॉस-अनुभागीय प्रकृति शामिल है, जो समय के साथ विकासात्मक प्रक्रिया के बजाय एक विशिष्ट क्षण में सशक्तिकरण को पकड़ती है।

2. साहित्य की समीक्षा

महिला सशक्तिकरण पर शोध अमर्त्य सेन के क्षमता दृष्टिकोण सहित कई सैद्धांतिक रूपरेखाओं से लिया गया है, जो सशक्तिकरण को केवल आर्थिक उन्नति के बजाय स्वतंत्रता और क्षमताओं के विस्तार के रूप में परिभाषित करता है। यह रूपरेखा विशेष रूप से बिहारी संदर्भ में प्रासंगिक है, जहां शैक्षिक पहुंच के बावजूद सांस्कृतिक बाधाएं अक्सर लड़कियों की क्षमता विकास को सीमित करती हैं। इसी तरह, बंडुरा का सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत यह समझने के लिए एक रूपरेखा

प्रदान करता है कि आत्म-प्रभावकारिता - सशक्तिकरण का एक मुख्य घटक - पर्यावरणीय प्रभावों और व्यक्तिगत एजेंसी के माध्यम से कैसे विकसित होती है। नारीवादी दृष्टिकोण, विशेष रूप से अंतर्विरोध पर जोर देने वाले दृष्टिकोण, बिहार के स्तरीकृत सामाजिक संदर्भ में शैक्षिक अनुभवों को आकार देने में जाति, वर्ग और धर्म के साथ लिंग कैसे संपर्क करते हैं, इसका संदर्भ देने में मदद करते हैं।

अनुभवजन्य अध्ययन लगातार किशोर लड़कियों के लिए शैक्षिक उपलब्धि और विभिन्न सशक्तिकरण संकेतकों के बीच सकारात्मक सहसंबंध प्रदर्शित करते हैं। विशेष रूप से, नंदा एट अल। (2020) ने बिहार में माध्यमिक शिक्षा पूरी करने और विलंबित विवाह के बीच महत्वपूर्ण संबंध पाया, जबकि शर्मा और सुजाता (2019) ने दस्तावेजीकरण किया कि कैसे शैक्षिक हस्तक्षेपों ने आगे की शिक्षा और कैरियर विकल्पों के संबंध में लड़कियों की निर्णय लेने की क्षमता में सुधार किया। हालाँकि, कुमारी का शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि केवल नामांकन गुणवत्ता के मुद्दों और लिंग-उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र को संबोधित किए बिना सशक्तिकरण की गारंटी नहीं देता है। विशेष रूप से बिहार के शैक्षिक संदर्भ की जांच करने वाले अध्ययनों से लगातार चुनौतियों का पता चलता है, जिसमें माध्यमिक स्तर पर लड़कियों के बीच उच्च ड्रॉपआउट दर (पटेल, 2021), उपस्थिति को प्रभावित करने वाली अपर्याप्त स्वच्छता सुविधाएं, और कक्षा में बातचीत में लैंगिक पूर्वाग्रह (गुप्ता, 2021) शामिल हैं।

इस अध्ययन के लिए, सशक्तिकरण को एक बहुआयामी निर्माण के रूप में क्रियान्वित किया गया है जिसमें पाँच डोमेन शामिल हैं: शैक्षिक सशक्तिकरण (शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता, शैक्षिक आकांक्षाएँ); मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण (आत्मसम्मान, आत्मविश्वास); सामाजिक सशक्तिकरण (पारस्परिक कौशल, सामुदायिक जुड़ाव); आर्थिक सशक्तिकरण (वित्तीय साक्षरता, कैरियर आकांक्षाएँ); और शारीरिक सशक्तिकरण (शारीरिक स्वायत्तता, स्वास्थ्य ज्ञान)। यह व्यापक दृष्टिकोण शैक्षणिक उपलब्धि से कहीं अधिक सशक्तिकरण को स्वीकार करता है, जो कि पटना के संदर्भ में किशोर लड़कियों के जीवन के अनुभवों की जटिलता को दर्शाता है।

3. क्रियाविधि

इस अध्ययन ने निष्कर्षों को त्रिकोणित करने और समझ की चौड़ाई और गहराई दोनों प्रदान करने के लिए गुणात्मक साक्षात्कार के साथ मात्रात्मक सर्वेक्षणों को मिलाकर एक मिश्रित-तरीके अनुसंधान डिजाइन को नियोजित किया। प्रतिभागियों में पटना के 8 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से यादृच्छिक रूप से चुनी गई 320 महिला छात्राएं शामिल थीं, जिसमें स्तरीकृत नमूने के साथ सरकारी और निजी संस्थानों में आनुपातिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया था। नमूने में विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से 16-18 वर्ष की आयु के छात्र शामिल थे, जिनमें 62% शहरी परिवारों से और 38% शहरी स्कूलों में आने-जाने वाले उप-शहरी क्षेत्रों से थे। डेटा संग्रह उपकरणों में एक व्यापक बालिका सशक्तिकरण मूल्यांकन

उपकरण शामिल है जिसे मान्य पैमानों से अनुकूलित किया गया है और पायलट परीक्षण के माध्यम से प्रासंगिक रूप से परिष्कृत किया गया है। इस 48-आइटम प्रश्नावली में पहले से पहचाने गए पांच सशक्तिकरण डोमेन को मापा गया। माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, घरेलू संपत्ति और मासिक आय का दस्तावेजीकरण करते हुए एक मानकीकृत पारिवारिक संसाधन प्रश्नावली का उपयोग करके सामाजिक आर्थिक डेटा एकत्र किया गया था। शैक्षिक पहुंच और गुणवत्ता का मूल्यांकन स्कूल के बुनियादी ढांचे, शिक्षक-छात्र अनुपात, सीखने के संसाधनों और शैक्षणिक प्रदर्शन संकेतकों के उपायों के माध्यम से किया गया था। किशोरों के लिए अनुकूलित बहु-आयामी सामाजिक समर्थन स्केल का उपयोग करके सामाजिक समर्थन का मूल्यांकन किया गया था, जबकि पाठ्येतर भागीदारी को स्कूल और समुदाय-आधारित जुड़ाव दोनों को ध्यान में रखते हुए एक व्यापक गतिविधि सूची के माध्यम से प्रलेखित किया गया था।

डेटा संग्रह प्रक्रिया में सख्त नैतिक प्रोटोकॉल का पालन किया गया, पूर्व संस्थागत अनुमोदन, माता-पिता की सहमति और प्रतिभागी की सहमति प्राप्त की गई। महिला अनुसंधान सहायकों ने गोपनीयता-संरक्षित सेटिंग्स में सर्वेक्षणों का प्रबंधन किया, जिसमें समझ सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय भाषा के विकल्प उपलब्ध थे। गुणात्मक घटक के लिए, प्रारंभिक विश्लेषण में पहचाने गए विविध सशक्तिकरण प्रोफाइल का प्रतिनिधित्व करने के लिए रणनीतिक रूप से चुने गए 40 छात्रों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार आयोजित किए गए थे। मात्रात्मक डेटा विश्लेषण ने चर के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए वर्णनात्मक आंकड़े, सहसंबंध विश्लेषण और एकाधिक प्रतिगमन मॉडलिंग को नियोजित किया। संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग ने सशक्तिकरण परिणामों पर प्रभाव के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मार्गों की जांच की। व्याख्यात्मक वैधता सुनिश्चित करने के लिए दो शोधकर्ताओं द्वारा स्वतंत्र कोडिंग के साथ, एनवीवो सॉफ्टवेयर का उपयोग करके गुणात्मक डेटा का विषयगत विश्लेषण किया गया।

तालिका 1: पटना में उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के बीच सशक्तिकरण डोमेन के वर्णनात्मक आँकड़े (एन=320)

सशक्तिकरण डोमेन	औसत स्कोर (0-100)	मानक विचलन	सरकारी स्कूलों का मतलब (n=180)	निजी स्कूलों का मतलब (n=140)	पी-मूल्य
शैक्षिक सशक्तिकरण	74.2	10.3	70.5	78.9	<0.01
मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण	66.8	13.5	63.2	71.4	<0.01
सामाजिक सशक्तिकरण	65.7	11.8	62.1	70.4	<0.01

आर्थिक सशक्तिकरण	59.3	15.7	55.8	63.9	<0.01
शारीरिक सशक्तिकरण	62.8	14.2	58.6	68.1	<0.001
समग्र सशक्तिकरण	68.4	12.6	64.2	73.7	<0.001

तालिका 1 पटना में 320 उच्चतर माध्यमिक छात्राओं के बीच सशक्तिकरण डोमेन के वर्णनात्मक आंकड़े प्रस्तुत करती है, जो सरकारी और निजी स्कूलों के बीच महत्वपूर्ण असमानताओं को उजागर करती है। विशेष रूप से, निजी स्कूल के छात्रों ने सभी सशक्तिकरण डोमेन - शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक और शारीरिक - में उच्च औसत स्कोर प्रदर्शित किया, जिसमें पी-मूल्य अत्यधिक महत्वपूर्ण अंतर (पी < 0.001 या पी < 0.01) दर्शाते हैं। इससे पता चलता है कि स्कूल का माहौल, संभवतः संसाधनों और सामाजिक-आर्थिक कारकों से प्रभावित होकर, लड़कियों के सशक्तिकरण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 68.4 का समग्र सशक्तिकरण माध्य स्कोर, लक्षित हस्तक्षेपों के लिए क्षेत्रों पर प्रकाश डालते हुए, अध्ययन की गई जनसंख्या के सशक्तिकरण स्तरों की आधारभूत समझ प्रदान करता है।

तालिका 2: निर्धारकों और सशक्तिकरण डोमेन के बीच सहसंबंध (एन=320)

चर	शैक्षिक सशक्तिकरण	मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण	सामाजिक सशक्तिकरण	आर्थिक सशक्तिकरण	शारीरिक सशक्तिकरण	समग्र सशक्तिकरण
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच	0.68**	0.59**	0.51**	0.49**	0.53**	0.64**
सामाजिक आर्थिक स्थिति	0.57**	0.41**	0.42**	0.59**	0.38**	0.48**
परिवार का समर्थन	0.61**	0.63**	0.58**	0.44**	0.53**	0.59**
शिक्षक समर्थन	0.63**	0.49**	0.43**	0.37**	0.45**	0.52**
साथियों का समर्थन	0.39**	0.54**	0.59**	0.28*	0.32**	0.46**
नेतृत्व गतिविधियाँ	0.61**	0.62**	0.60**	0.48**	0.41**	0.57**

खेल भागीदारी	0.36**	0.42**	0.41**	0.29*	0.48**	0.39**
सामुदायिक सेवा	0.32**	0.38**	0.49**	0.28*	0.31**	0.36**

*पी<0.01, **पी<0.001

तालिका 2 विभिन्न निर्धारकों और सशक्तिकरण डोमेन के बीच सहसंबंध का पता लगाती है, जो मजबूत सकारात्मक संबंधों को प्रदर्शित करती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच, पारिवारिक समर्थन और नेतृत्व गतिविधियाँ समग्र सशक्तिकरण और इसके विशिष्ट डोमेन के साथ महत्वपूर्ण सहसंबंध के रूप में उभरी हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति ने भी एक उल्लेखनीय सकारात्मक सहसंबंध प्रदर्शित किया, विशेष रूप से आर्थिक सशक्तीकरण के साथ। साथियों के समर्थन ने सामाजिक सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। अत्यधिक महत्वपूर्ण पी-मूल्य (पी <0.001) इन रिश्तों की मजबूत प्रकृति को रेखांकित करते हैं, लड़कियों के सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए इन निर्धारकों को संबोधित करने के महत्व पर जोर देते हैं। यह तालिका हस्तक्षेपों के लिए प्रमुख उत्तोलन बिंदुओं को प्रभावी ढंग से पहचानती है।

तालिका 3: एकाधिक प्रतिगमन विश्लेषण: समग्र सशक्तिकरण के भविष्यवक्ता (एन=320)

भविष्यवक्ता चर	**मानकीकृत बीटा गुणांक**	**से**	**टी मूल्य**	**पी-मूल्य**
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच	0.37	0.042	8.76	<0.001
मातृ शिक्षा स्तर	0.28	0.038	7.42	<0.001
परिवार का समर्थन	0.25	0.045	5.49	<0.001
नेतृत्व गतिविधि भागीदारी	0.22	0.041	5.21	<0.001
शिक्षक समर्थन	0.18	0.044	4.18	<0.001

आर² = 0.63, समायोजित आर² = 0.61, एफ(5,314) = 105.23, पी<0.001

तालिका 3 एकाधिक प्रतिगमन विश्लेषण के माध्यम से समग्र सशक्तिकरण के भविष्यवक्ताओं पर प्रकाश डालती है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच, मातृ शिक्षा स्तर, पारिवारिक समर्थन, नेतृत्व गतिविधि भागीदारी और शिक्षक समर्थन को महत्वपूर्ण भविष्यवक्ताओं के रूप में पहचाना गया। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हुए सबसे मजबूत भविष्यवक्ता के रूप में उभरी। 0.63 का उच्च आर² मान इंगित करता है कि ये भविष्यवक्ता सामूहिक रूप से समग्र सशक्तिकरण में भिन्नता के एक बड़े हिस्से की व्याख्या करते हैं। यह विश्लेषण नीति निर्माताओं और शिक्षकों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो सशक्तिकरण पहल में इन कारकों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल देता है।

तालिका 4: माँ के शिक्षा स्तर के आधार पर सशक्तिकरण स्कोर (एन=320)

माँ का शिक्षा स्तर	एन	माध्य सशक्तिकरण स्कोर	मानक विचलन	एफ	पी-मूल्य
कोई औपचारिक शिक्षा नहीं	76	56.8	13.7	38.92	<0.001
प्राथमिक शिक्षा	92	64.1	12.1		
माध्यमिक शिक्षा	103	74.2	10.4		
उच्च शिक्षा	49	82.5	8.9		

तालिका 4 लड़कियों के सशक्तिकरण स्कोर पर मातृ शिक्षा स्तर के प्रभाव की जांच करती है, जिससे एक स्पष्ट प्रवृत्ति का पता चलता है: जिन छात्रों की माताओं के पास उच्च शिक्षा स्तर है, वे काफी उच्च सशक्तिकरण स्कोर प्रदर्शित करते हैं। इन अंतरों का सांख्यिकीय महत्व (पी <0.001) सशक्तिकरण पर शिक्षा के अंतर-पीढ़ीगत प्रभाव को रेखांकित करता है। यह खोज लड़कियों के सशक्तिकरण को बढ़ाने की रणनीति के रूप में मातृ शिक्षा का समर्थन करने के महत्व पर प्रकाश डालती है, जो अंतर-पीढ़ीगत शिक्षा और समर्थन के शक्तिशाली प्रभाव को दर्शाती है।

तालिका 5: गहन साक्षात्कार से गुणात्मक विषय-वस्तु (n=40)

विषय	उल्लेख की आवृत्ति	प्रतिनिधि उद्धरण	मुख्य निहितार्थ
आकांक्षाओं पर मातृ प्रभाव	34 (85%)	"मेरी मां अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर सकीं, लेकिन उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मुझे समान बाधाओं का सामना न करना पड़े। उनका दृढ़ संकल्प मुझे बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करता है।"	सशक्तीकरण दृष्टिकोण का अंतर-पीढ़ीगत संचरण
शिक्षाविदों से परे परामर्श	29 (73%)	"मेरे गणित शिक्षक केवल समीकरणों पर ही नहीं, बल्कि करियर विकल्पों और जीवन की चुनौतियों पर भी चर्चा करते हैं। यह मार्गदर्शन मुझे वास्तविक दुनिया की समस्याओं से निपटने में मदद करता है।"	समग्र शिक्षक-छात्र संबंधों का महत्व
नेतृत्व अनुभव प्रभाव	28 (70%)	"विज्ञान क्लब का नेतृत्व करने से मुझे आत्मविश्वास से अपनी राय व्यक्त करना और दूसरों को एक समान लक्ष्य के लिए संगठित करना सिखाया गया।"	सशक्तिकरण उत्प्रेरक के रूप में व्यावहारिक नेतृत्व अनुभव

आर्थिक साक्षरता संबंधी चिंताएँ	26 (65%)	"हम अकादमिक विषयों को अच्छी तरह से सीखते हैं, लेकिन मुझे अभी भी समझ नहीं आता कि पैसे का प्रबंधन कैसे करें या वित्तीय स्वतंत्रता के लिए तैयारी कैसे करें।"	आर्थिक सशक्तिकरण को संबोधित करने वाले पाठ्यक्रम में अंतर
महिला रोल मॉडल दृश्यता	23 (58%)	"अपने समुदाय की महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में सफल होते देखकर मुझे विश्वास होता है कि मैं समान चुनौतियों से पार पा सकती हूं।"	संबंधित सफलता मॉडल का महत्व

तालिका 5 गहन साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक अंतर्दृष्टि के साथ मात्रात्मक डेटा को पूरक करती है। मुख्य विषय उभर कर सामने आए, जिनमें मातृ आकांक्षाओं का गहरा प्रभाव, शिक्षाविदों से परे मार्गदर्शन का महत्व, नेतृत्व के अनुभवों का सशक्त प्रभाव, आर्थिक साक्षरता के बारे में चिंताएं और दृश्यमान महिला रोल मॉडल का महत्व शामिल हैं। ये गुणात्मक निष्कर्ष समृद्ध संदर्भ प्रदान करते हैं, छात्राओं के जीवन के अनुभवों को दर्शाते हैं और शैक्षिक नीतियों और हस्तक्षेपों के लिए व्यावहारिक निहितार्थ पेश करते हैं। साक्षात्कार समग्र समर्थन प्रणालियों और व्यापक पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर जोर देते हैं जो शैक्षणिक और जीवन कौशल दोनों को संबोधित करते हैं।

4. परिणाम

वर्णनात्मक विश्लेषण से पूरे नमूने में सशक्तिकरण के स्तर में काफी भिन्नता का पता चला, 100-बिंदु पैमाने पर औसत समग्र सशक्तिकरण स्कोर 68.4 (एसडी=12.6) था। शैक्षिक सशक्तिकरण ने उच्चतम डोमेन स्कोर (एम=74.2, एसडी=10.3) दिखाया, जबकि आर्थिक सशक्तिकरण ने सबसे कम (एम=59.3, एसडी=15.7) दिखाया। सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर उभर कर सामने आए, जिनमें बाद वाले ने उच्च समग्र सशक्तिकरण स्कोर (पी<0.01) दर्ज किया। विशेष रूप से, जिन परिवारों की माताओं ने माध्यमिक शिक्षा पूरी की थी, उन परिवारों के प्रतिभागियों ने उन लोगों की तुलना में काफी अधिक सशक्तिकरण स्कोर दिखाया, जिनकी माताओं ने केवल प्राथमिक शिक्षा या उससे कम (p <0.001) प्राप्त की थी। सहसंबंध विश्लेषण ने पहली तीन परिकल्पनाओं का काफी हद तक समर्थन किया। स्कूल संसाधनों, शिक्षक योग्यताओं और शैक्षणिक प्रथाओं के समग्र सूचकांक के माध्यम से मापी गई गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच ने समग्र सशक्तिकरण (आर=0.64, पी<0.001) के साथ मजबूत सकारात्मक सहसंबंध दिखाया। सामाजिक आर्थिक स्थिति ने सशक्तिकरण परिणामों (आर = 0.48, पी <0.001) के साथ मध्यम सहसंबंध प्रदर्शित किया, विशेष रूप से आर्थिक और शैक्षिक सशक्तिकरण डोमेन के साथ मजबूत जुड़ाव के साथ। सामाजिक समर्थन नेटवर्क महत्वपूर्ण बनकर उभरे, जिसमें पारिवारिक समर्थन ने सशक्तिकरण

(आर=0.59, पी<0.001) के साथ सबसे मजबूत संबंध दिखाया, इसके बाद शिक्षक समर्थन (आर=0.52, पी<0.001) और सहकर्मी समर्थन (आर=0.46, पी<0.001) का नंबर आया।

पाठ्येतर गतिविधियों के संबंध में परिकल्पना को आंशिक रूप से समर्थन दिया गया था, केवल विशिष्ट प्रकार की गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण लाभ देखे गए थे। नेतृत्व-उन्मुख गतिविधियों ने सशक्तिकरण (आर=0.57, पी<0.001) के साथ मजबूत सकारात्मक सहसंबंध दिखाया, जबकि खेल भागीदारी ने मध्यम जुड़ाव (आर=0.39, पी<0.01) दिखाया। सामुदायिक सेवा गतिविधियों में नियमित भागीदारी विशेष रूप से सामाजिक सशक्तिकरण से जुड़ी हुई थी (आर=0.49, पी<0.001)। दिलचस्प बात यह है कि गहन जुड़ाव के बिना कई गतिविधियों में भाग लेने मात्र से सशक्तिकरण के परिणामों के साथ कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं दिखा। एकाधिक प्रतिगमन विश्लेषण से पता चला कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुंच, मातृ शिक्षा स्तर, पारिवारिक समर्थन और नेतृत्व गतिविधि भागीदारी के संयोजन ने समग्र सशक्तिकरण स्कोर में 63% भिन्नता को समझाया, जो सबसे मजबूत पूर्वानुमान मॉडल का गठन करता है। संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग ने आगे खुलासा किया कि सामाजिक समर्थन आंशिक रूप से सामाजिक आर्थिक स्थिति और सशक्तिकरण परिणामों के बीच संबंधों में मध्यस्थता करता है।

गुणात्मक निष्कर्षों ने इन सांख्यिकीय संबंधों पर प्रकाश डाला, जिससे पता चला कि कैसे पारिवारिक समर्थन विशेष रूप से शैक्षणिक उपलब्धि के लिए प्रोत्साहन, शैक्षिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता और शीघ्र विवाह के दबाव से सुरक्षा के रूप में प्रकट हुआ। शिक्षक का समर्थन तब सबसे प्रभावशाली था जब इसमें अकादमिक मार्गदर्शन से परे परामर्श शामिल था। प्रतिभागियों ने अक्सर सशक्तिकरण दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित करने के लिए उत्प्रेरक के रूप में रोल मॉडल - विशेष रूप से समान पृष्ठभूमि की शिक्षित महिलाओं - का हवाला दिया।

5. बहस

निष्कर्ष दर्शाते हैं कि पटना में लड़कियों का सशक्तिकरण संस्थागत, पारिवारिक और व्यक्तिगत कारकों के बीच जटिल बातचीत के माध्यम से उभरता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सशक्तिकरण के सबसे मजबूत एकल भविष्यवक्ता के रूप में उभरी है, जो सेन के क्षमता दृष्टिकोण के अनुरूप है जो शिक्षा को अन्य क्षमताओं को सक्षम करने वाली एक आवश्यक स्वतंत्रता के रूप में जोर देती है। हालाँकि, समान स्कूलों में पढ़ने वाली लड़कियों के बीच सशक्तिकरण के स्तर में महत्वपूर्ण भिन्नता पारिवारिक संदर्भ, विशेष रूप से मातृ शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है। यह सशक्तिकरण के अंतर-पीढ़ीगत संचरण का सुझाव देता है, जहां शिक्षित माताएं अपनी बेटियों के लिए सहायक सहायता और सशक्त भूमिका मॉडलिंग दोनों प्रदान करती हैं। सामाजिक समर्थन नेटवर्क का मजबूत प्रभाव बंडुरा के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत के साथ संरेखित होता है, जो दर्शाता है कि सामाजिक शिक्षा और सुदृढीकरण के माध्यम से सशक्तिकरण कैसे विकसित होता है। यह निष्कर्ष कि पारिवारिक समर्थन सहकर्मी समर्थन की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण योगदान देता है, किशोरावस्था के दौरान सहकर्मी प्रभाव

पर जोर देने वाले कुछ पश्चिमी साहित्य से अलग है, जो संबंधपरक गतिशीलता में सांस्कृतिक अंतर का सुझाव देता है। यह बिहार के संदर्भ में सशक्तिकरण के लिए विशेष रूप से स्कूल-आधारित हस्तक्षेपों के बजाय परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण के महत्व पर प्रकाश डालता है।

पाठ्येतर गतिविधियों के संबंध में सूक्ष्म निष्कर्षों से पता चलता है कि सहभागिता की गुणवत्ता और प्रकृति मात्रा से अधिक मायने रखती है। नेतृत्व गतिविधियों का स्पष्ट प्रभाव विकासशील सशक्तिकरण के लिए एजेंसी के अभ्यास को महत्वपूर्ण मानते हुए सैद्धांतिक ढांचे का समर्थन करता है। शैक्षिक प्रोग्रामिंग के लिए इसका महत्वपूर्ण निहितार्थ है, यह सुझाव देता है कि सार्थक नेतृत्व अनुभवों के लिए अवसर बनाना सामान्य गतिविधि प्रावधान की तुलना में अधिक प्रभावी हो सकता है। इन निष्कर्षों का बिहार में शैक्षिक नीति और व्यवहार पर कई प्रभाव हैं। सबसे पहले, उनका सुझाव है कि शिक्षक के व्यावसायिक विकास में विषय ज्ञान के साथ-साथ परामर्श कौशल और लिंग-उत्तरदायी शिक्षाशास्त्र पर जोर देना चाहिए। दूसरा, डेटा विशेष रूप से किशोर लड़कियों के लिए डिज़ाइन किए गए नेतृत्व विकास कार्यक्रमों में निवेश का समर्थन करता है। तीसरा, मातृ शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव बहु-पीढ़ीगत दृष्टिकोण के मूल्य का सुझाव देता है जो माताओं को उनकी बेटियों की शैक्षिक यात्राओं में शामिल करता है। सीमित संसाधनों वाले स्कूलों के लिए, पारिवारिक भागीदारी पहल को प्राथमिकता देने से महंगे बुनियादी ढांचे में सुधार की तुलना में अधिक सशक्तीकरण लाभ मिल सकता है।

अपने योगदान के बावजूद, इस अध्ययन की कई सीमाएँ हैं। क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइन चर के बीच संबंधों के बारे में कारण संबंधी अनुमानों को रोकता है। शहरी फोकस सामान्यीकरण को ग्रामीण संदर्भों तक सीमित करता है जहां विभिन्न बाधाएं काम कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, स्व-रिपोर्ट किए गए उपायों पर निर्भरता संभावित पूर्वाग्रहों का परिचय देती है, हालांकि गुणात्मक डेटा के साथ त्रिकोणीकरण वैधता को मजबूत करता है। भविष्य के शोध में समय के साथ सशक्तिकरण विकास को ट्रैक करने, ग्रामीण आबादी तक विस्तार करने और इस अध्ययन में पहचाने गए विशिष्ट सशक्तिकरण निर्धारकों को लक्षित करने वाले प्रयोगात्मक हस्तक्षेपों को शामिल करने के लिए अनुदैर्ध्य डिजाइनों को नियोजित करना चाहिए।

6. निष्कर्ष

यह अध्ययन अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करता है कि पटना, बिहार में उच्च माध्यमिक छात्राओं का सशक्तिकरण गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक पहुंच, सहायक पारिवारिक वातावरण और सार्थक नेतृत्व अनुभवों के अवसरों के अभिसरण के माध्यम से उभरता है। जबकि सामाजिक-आर्थिक कारक सशक्तिकरण के परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं, सहायक रिश्ते-विशेष रूप से माताओं और शिक्षकों के साथ-संसाधन की बाधाओं को आंशिक रूप से कम कर सकते हैं। निष्कर्षों से पता चलता है कि इस संदर्भ में किशोर लड़कियों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शैक्षिक पहल को बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जो शैक्षिक गुणवत्ता और नेतृत्व विकास को संबोधित करते हुए सामाजिक समर्थन नेटवर्क को मजबूत करते हैं।

अनुसंधान एक संदर्भ-विशिष्ट घटना के रूप में सशक्तिकरण को समझने में योगदान देता है जिसके लिए क्षेत्रीय-उपयुक्त माप और हस्तक्षेप दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। बिहार के लिए, जहां पारंपरिक लिंग मानदंड लड़कियों के शैक्षिक अनुभवों को आकार देना जारी रखते हैं, परिवार-केंद्रित दृष्टिकोण और नेतृत्व के अवसर सशक्तिकरण के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली मार्ग हो सकते हैं। जैसा कि भारत शिक्षा में लैंगिक समानता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जारी रखता है, ये अंतर्दृष्टि बिहार और इसी तरह के संदर्भों में युवा महिलाओं की अगली पीढ़ी के लिए शैक्षिक पहुंच को सार्थक सशक्तिकरण में बदलने के उद्देश्य से नीतियों और कार्यक्रमों के लिए व्यावहारिक दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ

1. नंदा, पी., दत्ता, पी., और दास, एस. (2020)। बिहार में लड़कियों की शिक्षा और शादी की उम्र पर सशर्त नकद हस्तांतरण का प्रभाव। *जर्नल ऑफ़ डेवलपमेंट स्टडीज़, 58*(4), 673-692.
2. शर्मा, ए., और सुजाता, के. (2019)। किशोरियों के बीच निर्णय लेने वाली एजेंसी: माध्यमिक शिक्षा की भूमिका। *इंडियन जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज, 26*(1-2), 49-78.
3. पटेल, आर. (2021)। बिहार में माध्यमिक विद्यालय की लड़कियों के बीच स्कूल छोड़ने के पैटर्न को समझना। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 56*(18), 45-52.
4. गुप्ता, वी. (2021)। पटना के माध्यमिक विद्यालय कक्षाओं में लिंग गतिशीलता: एक अवलोकन अध्ययन। *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 12*(2), 187-203.
5. सेन, ए. (2003)। क्षमता विस्तार के रूप में विकास। एस. फुकुदा-पार और ए.के. शिव कुमार (सं.) में, *मानव विकास में रीडिंग* (पृ. 3-16)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. बंडुरा, ए. (2001)। सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत: एक एजेंटिक परिप्रेक्ष्य। *मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 52*, 1-26.
7. कबीर, एन. (1999)। संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार। *विकास और परिवर्तन, 30*(3), 435-464.
8. पांडे, एल., और मिश्रा, एस. (2020)। लड़कियों की शैक्षिक आकांक्षाओं में माताओं की भूमिका: बिहार और झारखंड से साक्ष्य। *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 55*(9), 53-61.
9. क्रेसवेल, जे., और प्लानो क्लार्क, वी. (2018)। *मिश्रित पद्धति अनुसंधान को डिज़ाइन करना और संचालित करना* (तीसरा संस्करण)। सेज प्रकाशन।

10. बरुआ, एम., और गोस्वामी, आर. (2021)। किशोर लड़कियों के सशक्तिकरण में कारक के रूप में शिक्षक-छात्र संबंध: पूर्वी भारत में एक मिश्रित-तरीके का अध्ययन। *शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 96*, अनुच्छेद 103187.

11. देसाई, एस., और एंड्रिस्ट, एल. (2010)। भारत में लिंग स्क्रिप्ट और विवाह की उम्र। *जनसांख्यिकी, 47*(3), 667-687.

12. कुमार, आर. (2021)। किशोरियों की आत्म-प्रभावकारिता पर नेतृत्व कार्यक्रमों का प्रभाव: बिहार में एक अर्ध-प्रायोगिक अध्ययन। *जर्नल ऑफ एडोलेसेंट रिसर्च, 36*(2), 319-345।

13. मुरलीधरन, के., और प्रकाश, एन. (2017)। साइकिल से स्कूल जाना: भारत में लड़कियों के लिए माध्यमिक विद्यालय में नामांकन में वृद्धि। *अमेरिकन इकोनॉमिक जर्नल: एप्लाइड इकोनॉमिक्स, 9*(3), 321-350।

IJMRR